Dr. B.B Hegde First Grade College, Kundapura

Department Of Hindi

Record of GD conducted by Students

Class & Section: I BCA

Date of Conduction : 25/7/2022

SI.NO	GROUP I			GROUP II		
	NAME OF THE STUDENTS	REG.NO	SIGNATURE	NAME OF THE STUDENTS	REG.NO	SIGNATURE
1	Hassan	CA21032		Chirag	CA21016	
2	Rajath	CA21019		Anand Krishna	CA21007	

Topic: बैल की बिक्री

Essence of Discussion:

गुप्त जी कहानियों मे सात्विक उज्ज्वलता के दर्शन होते है। सभी कहानियाँ गांधीवादी दर्शन से पूर्णतः प्रभावित है। लेखक के सरल व्यक्तित्व की तरह ही उनकी रचनाओं की वस्तु और शैली भी सरल है।

Group I:

कई साल से फसल बिगड़ रही थी। बादल समय पर पानी नही देते थे। खेती के पौधे अकाल वृद्ध होकर असमय मे ही मुरझा रहे थे। परन्तु महाजनों की फसल का हाल ऐसा ना था। बादल ज्यों-ज्यों अपना हाथ खींचते, उनकी खेती मे त्यों-त्यों नए अंकुर निकलते थे। सेठ ज्वालाप्रसाद उन्ही महाजनों मे से थे! विधाता के वर से उनका धन अक्षय था। जिस किसान के पास पहुँच जाता, जीवन-भर उसका साथ न छोड़ता। अपने स्वामी की तिजोरी मे निरन्तर जाकर भी दरिद्र की झोंपड़ी की माया उससे छोड़ी न जाती थी! मोहन वर्षों से ज्वालाप्रसाद का ऋण चुकाने की चेष्टा मे था, परन्तु चेष्टा कभी सफल न होती थी। मोहन का ऋण दरिद्र के वंश की तरह दिन-पर-दिन बढ़ता ही जाता था। इधर कुछ दिन ज्वालाप्रसाद भी कुछ अधीर-से हो उठे थे। रूपये अदा करने के लिए वे मोहन के यहाँ आदमी-पर-आदमी भेज रहे थे।

Group II:

समय की खराबी और महाजन की अधीरता के साथ मोहन को एक चिन्ता और थी। वह थी जवान लड़के, शिबू की निश्चिन्तता। उसे घर के काम-कज से सरोकार न था। बिल्कुल ही न था, यह नही कहा जा सकता। भोजन करने के लिए यथा-समय उसे घर आना ही पड़ता था। बाप, मजूरी के पैसे लाकर किस जगह रखता है, इसके ऊपर दृष्टि रखनी पड़ती थी। पता मिल जाने पर बीच-बीच मे उन्हे सफाई के हाथ से उड़ाना भी पड़ता था। ऐसे ही और बहुत काम थे। दो-चार बार उसे बैलगाड़ी किराए के लिए चलानी पड़ी थी। सम्भव है, यह बेगार चलकर और अधिक करनी पड़ती। परन्तु हाल मे ही यह सम्भावना भी असम्भव हो गई है। अचानक एक दिन दो-चार घण्टे की बीमारी से हाल मे ही उसका बैल चल बसा (मर गया) था। इस प्रकार ईश्वर ने उसके स्वच्छन्द विचरण के पथ मे एक सुविधा और कर रखी थी। घर वालों के साथ उसका वही सम्बन्ध जान पड़ता था, जो खेती के साथ उन बादलों का होता है, जिनके दर्शन ही नही होते। यदि कभी होते भी है तो आए हुए धान्य को खेत मे ही सड़ा देने भर के लिए।

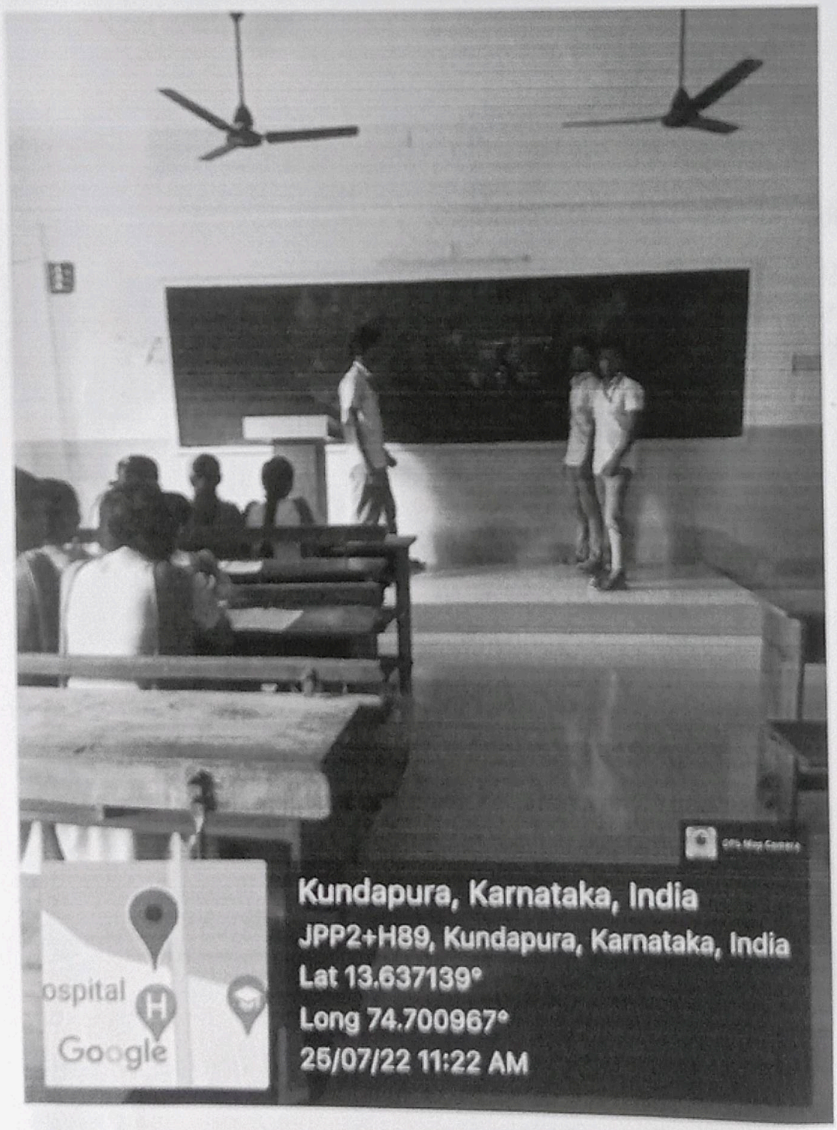

Conclusion:

डाकुओं ने एकदम देखा-वे केवल पाँच और दो-तीन सौ आदमी उनके विपक्ष मे उठ खड़े हुए है। उन्हें विस्मय करने का भी अवसर न मिला कि उन्होंने बन्दूक के बल पर एक-एक दो-दो करके इतने आदमी कैसे लूट लिए है। यदि ये उजडु की तरह बिगड़ खड़े हों, तो कौन इनका सामना कर सकता है! भय और साहस संक्रामक वस्तुएं है। शिबू का साहस देख कर उधर लुटे हुए लोगों का भय भी दूर हो रहा था। देखने तक का समय न था, परन्तु डाकुओं ने स्पष्ट देख लिया-एक साथ सब लोगों के भाव बदल गए है। उन लोगों मे से कुछ खन्दियाँ पार करके सड़क तक भी नही आ सके कि डाकू बन्दूकें हाथ मे लिए हुए द्रुतगति से सड़क के नीचे उतर गए। लूट का माल उठाने मे समय नष्ट करने की अपेक्षा अपने प्राण लेकर भागना ही उन्हें आधिक मूल्यवान प्रतीत हुआ। थोड़ी ही देर मे वे लोग आँखों से ओझल हो गए।

SIGNATURE OF THE FACULTY

SIGNATURE OF THE H.O.D

H.O.D. of Hindi
Dr. B. B. Hegde First Grade College
Kundapura - 576201

Dr. B.B Hegde First Grade College, Kundapura

Department Of Hindi

Record of Seminar by Student

Name of the Student: Vignesh

Class & Section: II BBA

Roll no:BA20048

Date of Representation: 23/07/2022

Topic: **पुस्तकालय**

Essence of Presentation:

पुस्तकालय में अनेक प्रकार की पुस्तकें, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ तथा अन्य पठन-सामग्री संग्रहीत की जाती हैं। इन पुस्तकों पर विषय के अनुसार क्रमसंख्या पड़ी रहती है। जब किसी को कोई पुस्तकें दी जाती हैं तो पुस्तक पर अंकित क्रमसंख्या उसके नाम के आगे रजिस्टर में दर्ज कर दी जाती हैं।

जब किसी व्यक्ति को किसी पुस्तक की आवश्यकता पड़ती है, तो वह पुस्तक का क्रमांक या पुस्तक का नाम और पुस्तकालयाध्यक्ष को बताता है और पुस्तकालयाध्यक्ष पुस्तक को निकालकर उसे दे देता है। इस प्रकार पुस्तकालय को काम अत्यंत व्यवस्थित एवं आधुनिक है।

पुस्तकालय निजी तथा सार्वजनिक दो प्रकार के होते हैं। कुछ लोग व्यक्तिगत तौर पर पुस्तकों को जमा करते हैं तथा घरेलू पुस्तकालय तैयार कर लेते हैं जो निजी पुस्तकालय कहलाता है। दफ़्तर, स्कूल, कॉलेज तथा प्रत्येक क्षेत्र में सार्वजनिक पुस्तकालयों में वैज्ञानिक सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं।

vignesh

Signature of student

Signature of faculty

Signature of H.O.D

H.O.D. of Hindi
Dr. B. B. Hegde First Grade College
Kundapura - 576201